

ह. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

ग्रंथ संग्रह :-

ग्रंथ क्र.

१८७ (३८७)

ग्रंथ नाम

यात्रा

मनोबोध.

विषय

मराठी काव्य.



रामदासी
३

मराठी

५१५/५१७

रामदासकृत मनेबोध व मुद्रकार्यांचे मराठी भाषान्तर
गांत रामदासांचे नांव आहे



मुळतऱ्हाई - धर्माधिकारी

शक १८३८ मार्गशीर्ष वद्य २

॥ श्री ॥

॥ श्रीरामसमर्थाः ॥ गणाधीराजोऽषसर्वागुणावा ॥ मूळारंभ
 आरंभतो निर्गुणावा ॥ नमुशारंभमूळवा ॥ वारिवावा ॥ गुणोप
 थानंतपाराधवावा ॥ १ ॥ मनासज्जनामत्तिपेथेचिजावा ॥
 तरि श्रीहरिपाविजेतो स्वभावे ॥ जनिनिद्यते सर्वसोऽुनिद्य
 वे ॥ जनिवेद्यते सर्वभावे करावे ॥ २ ॥ प्रभातेमनिरामचित्ति
 तजावा ॥ पुटेवेखरिरामअधि वदावा ॥ ३ ॥ सदाचारहाथो
 रसोऽुनियतो ॥ जनितोचितोमानविधन्य होतो ॥ ३ ॥ मनावा
 सनादुष्टकामानयरे ॥ मनासर्वथापापबुद्धिनकोरे ॥ मनाध
 र्मतो नियसोऽुनकोहो ॥ मनाअंतरिसारविचारराहो ॥ ४ ॥
 मनापापसंकल्पसोऽुनिद्यवा ॥ मनाससुकल्पजिविंधरा
 वा ॥ मनाकल्पनातेनकोविषयान्की ॥ ५ ॥ कारेघडेहोजनिसर्व
 चीत्वि ॥ ६ ॥ नकोरे मना ॥ ७ ॥ कारेनकोरे मनाकाम
 नानानाविकामो ॥ नकोरे मना ॥ ८ ॥ कारे मनाम
 छरु उंबसा ॥ ९ ॥ कारे मना ॥ १० ॥ कारे मनाम
 लने निवसो ॥ सतज ॥ ११ ॥ कारे मना ॥ १२ ॥ कारे मना
 सर्वलोकास्तिर निवव ॥ १३ ॥ कारे मना ॥ १४ ॥ कारे मना
 अतिस्वार्थबुद्धितुरेपा ॥ १५ ॥ कारे मना ॥ १६ ॥ कारे मना
 नहोतां मनासरिखेदे ॥ १७ ॥ कारे मना ॥ १८ ॥ कारे मना
 उरावी ॥ मनासज्जना ॥ १९ ॥ कारे मना ॥ २० ॥ कारे मना
 सिजावे ॥ परिअंतरिसा ॥ २१ ॥ कारे मना ॥ २२ ॥ कारे मना
 रामिधरावी ॥ दुःखाचिस्वयंसाऽुजिविकरावी ॥ देहेदुरवतसु
 खमानितजावे ॥ विवेकेसदासस्वरूपिभरावे ॥ २३ ॥ जनिस्व
 सुखीअसाकोपाआहे ॥ विचारिमनातु विशोघुनिपाहो ॥
 मनातांस्तिरपूर्वसंचितकेले ॥ तयासारिखेभोगनेप्रासजा
 लो ॥ मनामानेसिदुःखअनुनकोरे ॥ मनासर्वथाशोकचिन्ता
 नकोरे ॥ विवेकेदेहबुद्धिसोऽुनिद्यवि ॥ विदेहीपरोमुक्तिमा
 गितजावि ॥ २४ ॥ मनासांगपारावणाकायेजाले ॥ अकस्मा
 तनेराज्यसर्वबुडाले ॥ ह्मणो निकुडिवासनासारिविगि
 बबे लागलाकाबहोपाडिलागि ॥ २५ ॥ जीवाकर्मयोगे न
 निजन्मजाला ॥ परिसेवटिकाबमुखिनिमाला ॥ मठाथा
 रतेमसपथसिगले ॥ असख्याततेजन्मलेआणिमले ॥
 ॥ २६ ॥ जीवांकर्मयोगे निजन्मजाला ॥ परिसेवटिकाबघे

मनासज्जनामत्तिपेथेचिजावा ॥ नमुशारंभमूळवा ॥ वारिवावा ॥ गुणोप
 थानंतपाराधवावा ॥ १ ॥ मनासज्जनामत्तिपेथेचिजावा ॥
 तरि श्रीहरिपाविजेतो स्वभावे ॥ जनिनिद्यते सर्वसोऽुनिद्य
 वे ॥ जनिवेद्यते सर्वभावे करावे ॥ २ ॥ प्रभातेमनिरामचित्ति
 तजावा ॥ पुटेवेखरिरामअधि वदावा ॥ ३ ॥ सदाचारहाथो
 रसोऽुनियतो ॥ जनितोचितोमानविधन्य होतो ॥ ३ ॥ मनावा
 सनादुष्टकामानयरे ॥ मनासर्वथापापबुद्धिनकोरे ॥ मनाध
 र्मतो नियसोऽुनकोहो ॥ मनाअंतरिसारविचारराहो ॥ ४ ॥
 मनापापसंकल्पसोऽुनिद्यवा ॥ मनाससुकल्पजिविंधरा
 वा ॥ मनाकल्पनातेनकोविषयान्की ॥ ५ ॥ कारेघडेहोजनिसर्व
 चीत्वि ॥ ६ ॥ नकोरे मना ॥ ७ ॥ कारेनकोरे मनाकाम
 नानानाविकामो ॥ नकोरे मना ॥ ८ ॥ कारे मनाम
 छरु उंबसा ॥ ९ ॥ कारे मना ॥ १० ॥ कारे मनाम
 लने निवसो ॥ सतज ॥ ११ ॥ कारे मना ॥ १२ ॥ कारे मना
 सर्वलोकास्तिर निवव ॥ १३ ॥ कारे मना ॥ १४ ॥ कारे मना
 अतिस्वार्थबुद्धितुरेपा ॥ १५ ॥ कारे मना ॥ १६ ॥ कारे मना
 नहोतां मनासरिखेदे ॥ १७ ॥ कारे मना ॥ १८ ॥ कारे मना
 उरावी ॥ मनासज्जना ॥ १९ ॥ कारे मना ॥ २० ॥ कारे मना
 सिजावे ॥ परिअंतरिसा ॥ २१ ॥ कारे मना ॥ २२ ॥ कारे मना
 रामिधरावी ॥ दुःखाचिस्वयंसाऽुजिविकरावी ॥ देहेदुरवतसु
 खमानितजावे ॥ विवेकेसदासस्वरूपिभरावे ॥ २३ ॥ जनिस्व
 सुखीअसाकोपाआहे ॥ विचारिमनातु विशोघुनिपाहो ॥
 मनातांस्तिरपूर्वसंचितकेले ॥ तयासारिखेभोगनेप्रासजा
 लो ॥ मनामानेसिदुःखअनुनकोरे ॥ मनासर्वथाशोकचिन्ता
 नकोरे ॥ विवेकेदेहबुद्धिसोऽुनिद्यवि ॥ विदेहीपरोमुक्तिमा
 गितजावि ॥ २४ ॥ मनासांगपारावणाकायेजाले ॥ अकस्मा
 तनेराज्यसर्वबुडाले ॥ ह्मणो निकुडिवासनासारिविगि
 बबे लागलाकाबहोपाडिलागि ॥ २५ ॥ जीवाकर्मयोगे न
 निजन्मजाला ॥ परिसेवटिकाबमुखिनिमाला ॥ मठाथा
 रतेमसपथसिगले ॥ असख्याततेजन्मलेआणिमले ॥
 ॥ २६ ॥ जीवांकर्मयोगे निजन्मजाला ॥ परिसेवटिकाबघे

॥ २६ ॥ जीवांकर्मयोगे निजन्मजाला ॥ परिसेवटिकाबघे

उनिगोलां॥ महा शोरते मरुपुंथ्यचिगोले॥ असंख्यातते
 जन्मले आनिमूले॥ १९॥ मुरे येकसाचादुजाशोकवाहे॥ अ
 कस्मात्ततो हिपुटे जात आहे॥ पुरे नाजनि लोभरे क्षोभयाते॥
 लणो नि कूटि मागुता जन्म घेते॥ १९॥ धाम निमान विव्यथ
 चिंता वाहाले॥ अ कस्मात् हो नारहो उनिजाते॥ घडे नोगणि
 सर्व हि कर्म खेदे॥ योगे॥ मति मदे ते खेद मानि वियोगे॥ १९॥
 मनाराघ वा विन आशान करे॥ मना मान वा चिन्को कीर्ति
 लुरे॥ ज्या वणि ति वे दश खि पूराणि॥ लया वणि ता सर्व हि
 श्लाघ्य वाणे॥ १९॥ मना सर्व था सस सोडु न करे॥ मना सर्व था
 मिथ्य मां उ न करे॥ मना सस ते सस वाचे वदावे॥ मना मिथ्य ते
 मिथ्य सोडु नियावे॥ १९॥ मना हिं पुटे हो रजे माय पेठि॥ न करे म
 ना यात ना ते चि मोठी॥ निरो धे पवेते॥ उले गर्भ वासी॥ अघो
 मुखरे दुरवसा वाचक सी॥ २०॥ गवासा नाचु क विये र शरा
 मना कामना सोडि रे ज्ञान वापना गत ना धार ते गर्भ वासी॥
 मना सज्जना ने ट विः मना सज्ज ना हित माक्षि
 करावे॥ रघु नायक मना सज्ज ना हित माक्षि
 वायू सूत वा॥ जना कत्र याच॥ २१॥ नबोले
 मना राघवीण कां हि॥ जना बोल ती सुख ना हि॥ अ
 डिने घडि काळ आर दे हां ति सुल कोण सोडु
 पहाते॥ २१॥ रघु नायक ग सि ना वे॥ जना सारि
 खेव्य थ कां वास ना वे॥ सदा सव दाना म वाचे वसा दे॥ अ
 हंता मनि पाप निते न सो दे॥ २१॥ मना वीट मानु न का बाल न्या
 वा॥ पुटे मागु तारा म जो उल कै वा॥ सुखा वि घडि ता सुख्वा लो दत
 हे पुटे स्व वेजा उल को हि न रा हे॥ २१॥ दे हर क्षणा कारण
 यत के ला॥ परि से वटि काळ घे उनि गे ला॥ क रिरे मना भक्ति
 मारा घ वा छि॥ पुटे अंत रि सो डि चिंता भ वा चि॥ २१॥ म वा
 च्या भया का ये मित्रो सि ले जी॥ घ रिरे मना घे य धो का सि
 सा डि॥ र घु नाय का स्वा रि वा स्वा मि सी रि॥ नु पे क्षि क द
 का प ल्य दे उ धारी॥ २१॥ ही ना नाथ हारा म को दे उ धारी॥
 पुटे देख तो काळ पो टि थ ररी॥ जना वा क्ये न म स्त हं स य
 मानि॥ नु पे क्षि क दारा म दा सा भि मा नि॥ पि दि रा घ वा चे स दा
 त्रि द गा जे॥ बळे न करी पु का वि रा जे॥ पु रि वा हि लि सर्व जे

ह कुमारी का मवाले

पे विमानि नुपेक्षिकदारा मदासनिमानि ॥१९॥ समथी चियसे
 वका वक्रपाहे ॥ असासर्वपु म उबिकोणआहे ॥ ज्याचिल्लिखव
 णिल्लोक निने ॥ नुपेक्षिकदा ॥२०॥ महासंकटसोडिले देव
 जेणे ॥ प्रतापिबळ आगळसवरेणे ॥ ज्यातस्मरशेल्म ज्या
 सूळपणि ॥ नुपे ॥२१॥ आहिल्यासिब्य सिबारा घवेमुक्ति
 केलि ॥ पदिलागता दिव्यहोउ निगेलि ॥ ज्यावणितासिन
 लिवेद वानि ॥ नुपेक्षिकदा ॥२२॥ वसे मेरुमांदार हेस्युष्टला
 बा ॥ शशीसूर्य तारंगना मे घमाळा ॥ चेरं जीवक लेज
 निदासदोन्हि ॥ नुपेक्षि ॥२३॥ नुपेक्षिकदारा मरुपिघसना
 जिवामानबा निश्चयोतो वसना ॥ शिरीनार वाहनबोले
 पूराणि ॥ नुपेक्षिकदा ॥२४॥ असेहोअंतरिनावजसा ॥ वे
 सेहोतये अंतरिदेवतेसा ॥ अनयासिरसितअसेध्याप
 पाणि ॥ नुपेक्षिकदा ॥२५॥ यनासर्वदा देवसनिधआ
 हे ॥ सपाळुपणेअल ॥ ॥२६॥ सरवानंदआनंद
 केवलयदानि ॥ नुपे ॥ ॥२७॥ धक्रकेक्यासिमातेउ
 जेसा ॥ उडिबालिते ॥ ॥२८॥ हरिभक्तिवाघावगा
 जेनिशानि ॥ नुपे ॥२९॥ नुजला एकआहे ॥ रघुरा
 जअकिंतहोउ निरां ॥ ॥३०॥ दाहोयघदर्थिनकीजे ॥
 मनासज्जनाराघविवस् ॥ ॥३१॥ ज्यावणितिवेदशास्त्र
 पुराणे ॥ तयावणिनार ॥ ॥३२॥ पवाणे तयालागिहसर्व
 चाचल्यदिये ॥ मनासज्जनाराघविवस्ति किजे ॥३३॥ मनापा
 पाविजेसर्वहिसुखजये ॥ अतिआदरेठेविजेलक्षतेये ॥
 विवेकि कुडिकल्पनापालटिजे ॥ मनासज्जनाराघविविव
 स्ति ॥३४॥ बहुहिउतासुख होनारनाहि ॥ सिणावेपरिनालुडे
 हितकाहि ॥ विवारेबराअतरिबोधविजे ॥ मनासज्जना
 राघविवस्ति किजे ॥३५॥ सुठतापरिहेस्विआतो घरावे ॥ रघु
 नायका आपुलेसे करावे ॥ दिनानाथहातो उरीब्रीदगाजे
 मनासज्जनाराघविवस्ति किजे ॥३६॥ मनासज्जना एक
 जिविधरावे ॥ जनिआपुले हिततुंवा करावे ॥ रघुनाय
 का विनबालो नोको हो ॥ सदासर्वदा नोनिजध्यासराहे ॥
 ॥३७॥ मनाजनिमोन्यमुद्रा घरावि ॥ कथाआदरेराघवा
 विकरावी ॥ नयरामतेधामसोडुनिधावे ॥ सुरवालागिआ
 रण्यसेवितजावे ॥३८॥ ज्याचेनिसंगेसमोधानसंगे ॥



55

अहंता अकस्मात्तये उ निलागे ॥ तथा संगति विगति कोणगो
 जि ॥ जया संगति नेम तीराम जे उ ॥ १४॥ मना जे घडिरा घ वा
 विन गेली ॥ जनिते तुं वा अपु लि हान केली ॥ रघुनाय का वा
 ण तो सीन आ हे ॥ जनि दक्ष ताल सु ला उ निसा हे ॥ १५॥ मनि लोच
 नि श्री हरितो वि पा हे ॥ जनि जाणता म क हो उ नि रा हे ॥ गुणि प्रि
 त ला गो क्र मु सा ध ना वा ॥ ज गि धन्य तो दा स सर्वे त्त मा चा ॥ १६॥
 सदा बोल न्या सा रि ख त्वा ल तो हे ॥ अ ने के सु दो थ क दे वा सि पा हे
 स गु णि म जे ले श ना हि त मा चा ॥ ज गि धन्य तो दा स सर्वे त्त मा चा
 ॥ १७॥ न से अ त रि का म का रि वि का रि ॥ उ दा सि न जे ता प सि
 म् चारी नि वा ला म नि ले श ना हि त मा चा ॥ ज गि धन्य तो दा स
 सर्वे त्त मा चा ॥ १८॥ म दे म द्य रे सां उ लि स्वार्थ बु धि ॥ प्र पंचि क
 ना हि त या ते उ पा धि ॥ सु ख वे स्य ने न मु वा चा सु वा वा ॥ ज गि
 धन्य तो दा स सर्वे त्त मा चा ॥ १९॥ नि वे द नो त त्व चिं ता मु वा रे
 न लि पे क दा उ ब वा दे ॥ सु ख से वा दे जो उ ग मा चा ॥
 ज गि धन्य तो दा स सर्वे त्त मा चा ॥ २०॥ न दा आ ज वि प्रिय जे स
 र्व लो कि ॥ स दा स र्वे त्त मा चा ॥ २१॥ के न वे ले क दा मि थ्य
 वा चा त्रि वा चा ॥ ज गि धन्य तो दा स सर्वे त्त मा चा ॥ २२॥ स दा से
 वि आ र ण्य क र ण्य क ॥ क दा क ल्प ने च नि मे कि
 च छे ना म नि नि श्च यो द ॥ ज गि धन्य तो दा स सर्वे त्त मा चा ॥ २३॥
 न से मा न सि न स आ र ॥ अं त रि प्रे म पा रा पि पा रा ॥
 र णि दे व हा म क्त ॥ म वि ज या ॥ ज गि धन्य तो दा स सर्वे त्त मा
 चा ॥ २४॥ ही ना त्वा द या लु म न वा म वा बु ॥ अ हा बु द्ध पा बु जु
 नि दा स पा बु ॥ त या अं त रि क्री घ स ता प के वा ॥ ज गि धन्य तो
 दा स सर्वे त्त मा चा ॥ २५॥ ज गि हो र जे धन्य या रा म ना मे ॥ क्रि या
 म क्ति उ पा स न नि य ने मे ॥ उ दा सि न ना त त्वा सा र आ हे ॥
 स दा स र्वे दा मो क् वि व ति रा हे ॥ २६॥ न को वा स ना वि ष इ च
 ति रू पे ॥ प दा धि जे उ का म ना पू र्व पा पे ॥ स दा रा म नि का म
 चिं ति त जा वा ॥ म ना क ल्प त्वा ल श तो हि न सा वे ॥ २७॥ म
 ना क ल्पि ता क ल्प को रि ॥ न के र न के स र्व धा रा म मे रि ॥ म ना
 क ल्पि ता रा म ना हि ज या ला ॥ अ ति आ द र प्रि ति ना हि त या
 ला ॥ २८॥ म ना रा म क ल्प त र क्ता म धे नु ॥ नि धि सा र चिं ता म
 णि का य वा णु ॥ ज या चे नि यो ग घ उ स र्व स ता ॥ त या सा
 म्य ता का य सि को ण आ ता ॥ २९॥ उ भा क ल्प व क्षा त वि दुः



शत। आकाश रूपेण शत। नये अरुण शत। अक्षर शत। शत। उभयानां कुरु शत।

आनंददाता ॥ तथा लागलित स्वता सार्व्वित्ता ॥ तयाचे मुखीना
मघेता फुकाचि ॥ मनासांगपा रेनुसे काये वेचे ॥ १॥ तिहिलोक
जाबुसके कोपयेता ॥ निवाला हास्तो मुखेना मघेता ॥ जपे पाव
तिआदरे विश्वमाता ॥ म्हणोनि म्हणारे म्हणाते विजाता ॥ २॥ अ
जामेळ पापिव दे पूत्रकामे ॥ तयामूक्तिनारायणाचे निनामे ॥
सुरवाकारणैरुवटलिरामवानि ॥ मुखे बोलता ख्यात जालि पुरा
णी ॥ ३॥ महासक्त हा प्रल्हाद हा देसूची ॥ जपे रामनामा वळि
नियकाची ॥ पिनापापरपितया देखेवना ॥ जनि देस तो राम
मुखि हणोना ॥ ४॥ मुखेना मनाहित यामुक्ति कैचि ॥ अहेतारुणे
यातनाते फुकाचि ॥ पुटे अतं य इल तो दिनवाना ॥ म्हणोनि म्हणा
रे म्हणा देवराणा ॥ ५॥ हरिने मस्तपानानतारि ॥ वहुतारि लेमा
न विदेह धारि ॥ नया मनामिसदा ॥ विकल्पि ॥ वदेनाक
राजीव तो पापरापि ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥ ॥



शत
न

राहे ॥ मनातोची तो रा मरव व मे ह ॥ १००॥

वार्थ लागे ॥ क्रिय विन वाचाळतानि वारि ॥ तुटे वा द संवाद
 तो हिन कारी ॥ १॥ जनि वाद वेवाद सेणे निधावा ॥ जनि सुख
 से वाद सुरवे करावा ॥ जनितो त्विनो शोक से साप हरि ॥ तुटे वाद
 संवाद तो हित कारी ॥ १॥ तुटे वाद से वाद याते म्हणावे ॥ विवेके
 अहेता व माने जिनावे ॥ अहेता गुणे वाद नाने विकारि ॥ तुटे वा
 द संवा ॥ १॥ हिता कारण बोलणे सय आहे ॥ हिता कारणे सर्व
 शोधूनि पाहे ॥ हिता कारणे च उपरा नतारि ॥ तुटे वाद संवाद ०
 ॥ १११ ॥ जनिसांगता ऐ कता जन्म गेला ॥ परि वाद वेवाद ते सत्ति
 ठेला ॥ उ उ संहाय वाद हा उंच धारी ॥ तुटे वा द संवाद ॥ १२ ॥ जनि
 हांत पंडित सं उडित गेले ॥ अहेता गुणे ब्रह्म राक्षे सजाले ॥ तथा
 विन विपन्नता कोण आहे ॥ मजा सर्व जानी वसे उ निराहे ॥ १३ ॥
 फुकाने जनि बोलता काय वेने ॥ दिस विस अ भयं तरी गर्व सा
 चे ॥ क्रिय विन वाचाळता ॥ विचारि तुसा तु विशोधु
 निपाहे ॥ १४ ॥ तुटे वाद सं ॥ विवेके अहेता वद
 पालटावा ॥ जनि बोल ॥ वि क्रिया पालटे नृत्ति पं
 ये सिजावे ॥ १५ ॥ बंध ॥ अंबर वि तात याचे श्री
 हरि जन्म सोही ॥ दिल ॥ या उपम नि ॥ नुपे क्षि
 कदाराम दास मिमानि ॥ ले क र बा पु उ दैन्य वा ने ॥
 सुपात्रा किता दि ध लि ॥ वं जीव जारा गणी प्रेम र वा
 णि ॥ नुपे क्षि क दा ॥ १७ ॥ गज ॥ तुटे वा द पा हे ॥ तथा कारणे
 श्री हरि धो व ता हे ॥ उ उ धा त नि जा हा ला जी व दा नि ॥ नुपे ०
 ॥ १८ ॥ आजामे च पा पित या अ त आ लो ॥ सुपा च पु णे तो जनि
 मुक्त कला ॥ अ ना था सि आ धा र हा च क्रे पा णि ॥ नुपे क्षि ॥ १९ ॥
 वि धि कारे जे हा ला म च वर्गे ॥ ध रि क र्म रू पे ध रा पृ थ
 मा गी ॥ ज नार क्ष णा कारे नि च या नि ॥ नुपे क्षि क दा ॥ २० ॥
 महा भक्त प्र ल हा द हा क र विला ॥ म्ह णे नि त या कारे सि व
 जाला ॥ न ये ज्वा च वि शा च स नि ड्ढ को नि ॥ नुपे क्षि क दा र म
 ॥ २१ ॥ छ पा सा कि ता जा हा ला व ज्र पा णि ॥ ते या कारे पो वा म नु
 चक्र पा णि ॥ दि जा कारे भा र्ग उ चा प पा नि ॥ नुपे क्षि क दा ॥ २२ ॥
 आ हि ल्मा ला गि आ र प य पं थें ॥ कु टा वे पु टे दे व व दि त या ते ॥
 ब के सो उ ता दे व व दि त या ते ॥ तो धा व गा जे नि शा नि ॥ नुपे क्षि
 क दा ॥ २३ ॥ त या द्रो प दि कारे ला गे वर्गे ॥ च्छे धा व तु सर्व सां
 उ नि मा गे ॥ क षि ला गि जाला अ से बो ध्य मो नि ॥ नुपे क्षि क ॥ २४ ॥



स्वय

अनाथादिना कारणे जन्मताहे ॥ कळंकिपुटे देव होनार आहे ॥
 तया वर्षी तासी नलिवे दवणी ॥ नृपेक्षिक ॥ २१ ॥ जना कारणे
 देवलिला वनारी ॥ बहुतां परि आदरे वेशधारी ॥ तयाने पाति
 ते जनि पापहृपि ॥ दुरामेकसे नष्टचा उख पापि ॥ २२ ॥ जगिध
 न्य तो रामसुखे निवाला ॥ कथा ऐकतां सर्व नष्टिनजाला ॥ देहे
 भावना राम बोधे उजळी ॥ मनावाना रामसुख पाळी ॥ २३ ॥ म
 ना वासना वासुदेविवसे दि ॥ मना कामना कामसंगिनसूदे ॥ म
 ना कल्पना वा उगितेन किजे ॥ मनासज्जनारा विवस्ति किजे ॥ २४ ॥
 गतिकारणे संगतिसंगतिसज्जनास्वि ॥ मलिपाले सुमति दुर्ज
 नास्वि ॥ रतिनायकस्विपरिनष्ट आहे ॥ हणो निमना तित होउनि
 राहे ॥ २५ ॥ मना अल्पसंकल्प तो हिनसावा ॥ सदासुसंकल्पस्वि
 तिवसावा ॥ जगिज नि कल्प तो हिनसावा ॥ रमाकोतये कात का
 छिन्नजावा ॥ २६ ॥ मजावा नं रामयुक्तः करी चाणये कुमु
 खिशब्दये कु ॥ क्रिया पाह ॥ २७ ॥ धरा जान किनाये का
 ते विवेक ॥ २८ ॥ विचार ॥ २९ ॥ इनिचलि ॥ तयस्वेनिसं
 तप देह निवळे ॥ ३० ॥ शोलोनको हो ॥ जनिचाल
 नेशुद्रनेमस्त हो ॥ ३१ ॥ त्तविशाचरासि ॥ जणोमान
 सिस्थापिला विश्वयेसि ॥ ३२ ॥ स्पशनिपुण्यजेउ ॥ तथासा
 षणे नष्टसंदेहमेउ ॥ ३३ ॥ गंगि ॥ तथावितरागी ॥ क्षेमा
 शोतिभोगी ॥ ३४ ॥ द्यादक्षया ॥ ३५ ॥ मनाक्षामनादन्यवाना ॥ एहि
 लक्षणा जाणिजे योगिशरण ॥ ३६ ॥ धरीरे मनसंगतिसज्जनस्वि ॥
 जेणे वृत्तिहे पालवे दुर्जनास्वि ॥ खळे भावसुद्धिसन्मार्ग लागे ॥
 महा छरतो काळविकाळनेगे ॥ ३७ ॥ मये व्यापिले सर्वसंसार आहे ॥
 मया तितसंत आनंत पाहे ॥ जया पाहातां देत कां हिवसेना ॥ म
 यमानसि सर्वथा हिअसेना ॥ ३८ ॥ जिवाश्रेष्ठ तो प्रष्टसांगुनि गेला
 परिजिव अज्ञान ठेला ॥ देह बुद्धिवा निश्चयो तो टुळेना ॥ जु
 ने ठेवन मिपणे कळेना ॥ ३९ ॥ मनेना उिले वितले गुप्त जाले ॥
 जिवा जन्मदारिद्र्याकोणि आले ॥ देह बुद्धिचे कर्मखोटे कळ
 ना ॥ जुणे ठेवने ॥ ४० ॥ पुढे पाहातां सर्वे हि कोदले असे ॥ आभा
 ग्यासिरे द्रव्यप्राशन दिसे ॥ अभाविके दोष पुण्यगाडिपडना ॥
 जुने ठेवन मिपणे कळेना ॥ ४१ ॥ जयाचतुयाचकले प्राप्ताहि
 गुणो गी विले जाहाले दुःखदेहि ॥ गुणावगळे घृति ते हि वळे
 ना ॥ जुणे ठेवने ॥ ४२ ॥ म्हणे दोससायाससत्वेकरावे ॥ जनि



तेसा
ना

जाणतां पायत्याचे धरवे ॥ गुरु अंजने वीणते आकुळेना ॥ जु
 ने ठेवणे ॥ १६ ॥ कळेना कळेना दळेना दळेना ॥ दळेना दळेना
 संशयो हि दळेना ॥ गळेना गळेना अहेता गळेना ॥ वळे अकुळे
 नामिळेना मिळेना ॥ १७ ॥ अविद्या गुणमान वा उमजेना ॥ मम
 कले हित या पाविजेना ॥ १८ ॥ परिसे विषो बोधिले दुदुना ॥ परिसे
 समिथ्या असो केण जाणे ॥ १९ ॥ जगिपा हातां सावते कार्य आहे ॥
 अति आदरे सर्व शोधु निपाहे ॥ पुढे पाहा तापा हातां देव जो उ ॥
 मम मंत्राति अज्ञान ठेव माउ ॥ २० ॥ सदा विषयो चितिता जन्म गेला ॥
 अहेता व अज्ञान जन्मासि आला ॥ विवेके सदा सस्वरूपि भवि ॥
 जिवा उगमि जन्मना हि स्वभावे ॥ २१ ॥ दिसे लोचनिते से अल्प को
 रि ॥ अकस्मात् आकार लेकाळ मोडि ॥ २२ ॥ पुढे सर्व जा लकारे ते
 राहे ॥ मनासे त अनंत शोधु निपाहे ॥ २३ ॥ तुटेना फुटेना वळेना दळे
 ना ॥ सदा संवले मिपणें कळेना ॥ तया ये करूपासि दुजेन साहे ॥ म
 नासे त अनंत शोधु निपाहे ॥ २४ ॥ निराकार आकारा दिक्त्वा ॥
 जया सांगता सिन लवटे ॥ २५ ॥ विवेक लडाकार हा उ निराहे ॥
 मनासे त अनंत ॥ २६ ॥ जगिपा हातां सावते ॥ २७ ॥ जगिपा हातां
 न्वक्षत लक्षि ॥ २८ ॥ जगिपा हातां सावते ॥ २९ ॥ मनासे त अनंत ॥ ३० ॥
 नसे पीते नास्ते नार ॥ ३१ ॥ अज्यक नुनि वळु हि
 स्तण दास विवासेत ॥ ३२ ॥ संत अनंत शोधु निपाहे ॥ ३३ ॥
 रवरे शोधिता शोधिता ॥ ३४ ॥ ना बोधिता बोधिताचे
 धिताहे ॥ परिपूर्वी सज ॥ ३५ ॥ गिं ॥ वरानि श्रयो पाविजे
 सानुरगे ॥ ३६ ॥ अहिनि ॥ ३७ ॥ बोळखवा ॥ जया पा हाता
 मोक्ष ताकाळ जिवा ॥ ३८ ॥ लगि गुणि पकवि ॥ ज
 निसंग सो उनि सुरवे ॥ ३९ ॥ शानु के कार्य कर्ता ॥ न वृष्टि श्र
 त्ता ॥ पुरे हनि पत्ती ॥ न लिपे विकृता ॥ ते या निर्विकल्पासि कल्प
 त जावे ॥ अनिसंग सो उनि सुरवे असावे ॥ ४० ॥ चहता परिकुस
 रित वसाण ॥ परिअंतरि पाहिजे तो निवाडा ॥ मसारे साचार ते
 गबारे ॥ समस्ता मये ये के तो ध्यागबारे ॥ ४१ ॥ न के पिउ ज्ञाने न के
 तव ज्ञाने ॥ समाधान काहि न कृतान माने ॥ न के योग योगे न के
 भोगे सागे ॥ समाधान ते से जन्माचे निसंगे ॥ ४२ ॥ महावाक्य त्वा
 दिका पंच कर्णे ॥ इति यासि संकेत दा विजेतो ॥ तया सा उनि चरे ॥ ४३ ॥
 माना विजेतो ॥ ४४ ॥ न कोरे मना वा दे हा रे वें दे का रि ॥ न कोरे मना
 में देना ना विकारि ॥ दिसे ना ज निते चि शोधु निपाहे ॥ वरे पा हा
 ना गुजते ये चि आहे ॥ करि घे उनि जाता ॥ कदा अ कळेना ॥
 जनि सर्व को दा टले ते कळेना ॥ ४५ ॥ श्रुति न्याय मिमांसे ते
 त के शास्त्रे ॥ अंति वेद वेदांत वा के विक्रि ॥ स्वयं शेष मो नाव



अ

जगिपा हातां सावते
 न्वक्षत लक्षि
 नसे पीते नास्ते नार
 स्तण दास विवासेत
 रवरे शोधिता शोधिता
 धिताहे
 सानुरगे
 मोक्ष ताकाळ जिवा
 निसंग सो उनि सुरवे
 त्ता
 त जावे
 रित वसाण
 गबारे
 तव ज्ञाने
 भोगे सागे
 दिका पंच कर्णे
 माना विजेतो
 में देना ना विकारि
 ना गुजते ये चि आहे
 जनि सर्व को दा टले ते कळेना
 त के शास्त्रे

ना

जा

लं पां वे अति आदरे राम रूपी ॥ भयातिल निश्चित य स स्वरूपी ॥
 कदा तो जनि पा हाता हि दिसेना ॥ सदा आडु के भिन्न भावे अ
 सेना ॥ ८९ ॥ सदा सर्वदारा मसनिध आ हे ॥ मना संत आनंतरी
 घु नि पा हे ॥ अखंडित भे टिर घुर जय गु ॥ मना सां उरे मी पु ण
 चा कु पां गु ॥ ९० ॥ भूते पि उ ब्रह्मा उ हे रे क्य आ हे ॥ परि सर्व हि स
 स्वरूपि न सा हे ॥ मना भास ले सर्व कां हि पा हा बे ॥ परि सग सो उ
 नि सु खे र हा वे ॥ ९१ ॥ दे हे भा वना ज्ञान शखे कु दा वे ॥ वि दे हि प पो
 भक्ति मागे स्वि ज वे ॥ विरक्ति बळें नि द्यं सर्व य जा वे ॥ अति आदरे
 राम रूपि भ जा वे ॥ ९२ ॥ दे ह बुद्धि वा नि श्रव यो ज्या ट छे ना ॥ तथा ज्ञा
 न कल्यांत काळि कळे ना ॥ ९३ ॥ मना ना कळे ना टळे रूप ज्यत्वे ॥
 दुजे विन तो ध्यान सर्वोत्त मत्ति ॥ तया रूपा ते हि न दि द्यं तरा
 हे ॥ ते धे सं ग निः सं ग दो न्नि न रा हे ॥ ९४ ॥ ने के जो पा ता ने पा तां
 रा म रा णा ॥ न के व नि ता वे त जे ज्ञा पृ ष णा ॥ न कृ द्र थ अ द्र थ
 सा क्षो तथा चा ॥ अति ने न वा ॥ अ व से ह द र दे व तो
 को ण के सा ॥ पु से सा द व ॥ ९५ ॥ दे ह रा कि ता दे ह को
 दे र हा तो ॥ पु दे मा गु ता ॥ ९६ ॥ व से ह द र दे व
 तो जा नु ण रे सा ॥ न भ ॥ जा ण रे सा ॥ स दा सं च ला
 ये ल ना हे जा वे कां हि ॥ त ॥ को दे ठा व ना हि ॥ ९७ ॥ न
 भा सा रि खे रू प या रा घ व ॥ ति ता म ब तु टे भ वा वे ॥
 तथा पा हा ता पा हा ता ॥ य ल क्ष स ल क्ष सर्व बु ज ले
 ॥ ९८ ॥ न मि वा व रे जे अ ॥ ९९ ॥ रि ता ठा व या रा घ वा
 वी ण ना हि ॥ ज या पा हा ता दे व बु द्धि उ रे ना ॥ स दा सर्व दा अर्त्त
 पो टि पु रे ना ॥ १०० ॥ प्र य व्या पि ले सर्व श्रु ति स आ हे ॥ र घु ना
 ये का उ प मा ते न सा हे ॥ दु जे वि ण न जो तो दे व स्व भा वे ॥ तथा व्या
 प कु व्य थ के से म्हा णा वि ॥ १०१ ॥ अति जि र्ण वि स्ती र्ण ले र प आ
 हे ॥ ते धे त क सं प क तो हि ने सा हे ॥ अ गु ट तं गु ट ना क्का ब सो
 पे ॥ दु ज वि न ले ख ण स्वा मि प्र ता पे ॥ १०२ ॥ कळे आ कळे र प
 ते गु ण हा ता ॥ ते धे आ ट लि सर्व सा क्षि अ व स्था ॥ मना उ न्म
 नि शब्द खं दित रा हे ॥ त गे तो चि तो रा म सर्व त्र पा हे ॥ १०३ ॥
 हा वी ब रि व मा जि दु जे दि से ना ॥ म नि मा न सि द्धे त कां हि व से
 ना ॥ ब ह ता दि सा आ पु लि भे रि जाली ॥ वि दे हि प पो सर्व का या
 नि वा लि ॥ १०४ ॥ म ना गु ज रे तु ज हे प्रा प्त जाले ॥ परि अं तरि पा
 हि जे य ल के ले ॥ स दा अ व णो पा वि जे नि श्र व या सी ॥ घुरि स ज्ज
 ना स ग ति ध न्य हो सि ॥ १०० ॥ म ना सर्व हि स ग सो उ नि द्यं मे का ॥
 हा सर्व संग सि सो उ ॥ म ना संग हा मो क्ष ता काळ जो उ ॥ म ना



सेग हासाध कासिद्धसोजी मनामहाद्वैतनिःशेषमोजी ॥२०२॥
 मनाद्विशते ऐकतां दोषजाति ॥ मनामंदते साधनायोग्ये
 हेति ॥ च्छेदज्ञान वैराग्यसामर्थजंगी ॥ सुणोदासविश्वासता
 मोक्षमार्गी ॥२०३॥ ६२॥ ६२॥ ६२॥ ६२॥ ६२॥ ६२॥ ६२॥



प्र... ॥ १६० ॥ जणे मक्षिका मक्षिलि जाणावेची ॥ त्या जणे नालासि प्रासके वि ॥ अहेभाव जे मानसि चा विरेना ॥ त्या शान कल्यांत कोळिमिळेना ॥ ६१ ॥ नकोरे मना वाद हा खेद करी नकोरे मना भेदन न करि ॥ नकोरे मना सीकडे पुढिल सि ॥ अहेभाव जे राहिल तुज पासि ॥ ६२ ॥ अहेता गुणे सर्व हि दुःख हातें ॥ मुखे विल्लि ज्ञान ते व्यर्थ जाते ॥ सुखे राहाता सुखीह सुखे भाते ॥ अहेता तुझे विषो धूनि पाते ॥ ६३ ॥ देह बुद्धिचे निश्चयो दड जाला ॥ देहातिले हेतसां इत गला ॥ देह बुद्धि ते आत्म बुद्धि करावे ॥ ६४ ॥ जना विधरा वि ॥ ६५ ॥ गुणांता आठवावा ॥ मन प्रजननि घरा वि ॥ ६६ ॥ तरिलोपनिश्चित गला ॥ संगतिसंजननि करा हाते ॥ मुखे विल्लि ज्ञान सुखे भाते ॥ अहेता तुसि ॥ ६७ ॥ देहाकार विस्तारया देहाचा ॥ स्त्रिया पुत्र मित्रादि के मोहाची ॥ बळभाति हे जन्मचिं ना हरा वि ॥ सदा संगतिसंजननि विधरा वि ॥ ६८ ॥ बरा निश्चयो शास्त्रिताचा करा वा ॥ ह्यणे दास संदेह तो विसरा वा ॥ घडिने घडिसार्थकाची करा वी ॥ सदास सं ॥ ६९ ॥ करिवृत्तिनि वृत्तितो संत जाणा ॥ दुराशा गुणे न के दैन्य वाना ॥ उपाधि देह बुद्धि ते वाद वि ते ॥ परिसंजनना के वि बाधोसके ते ॥ ७० ॥ नसे अंत आनंत सता पुसा वा ॥ अहेकार विस्तार हा निरसा वा ॥ गुणे विण निरुण ते आ ठवा वा ॥ देह बुद्धिचा आठ उनाठवा वा ॥ ७१ ॥ देह बुद्धि हे आत्म बोधेस जाची ॥ विवेकेत या वस्तु विभेदि घ्या वि ॥ तें दाकार हे वृत्तिना हि स्वभावे ॥ ह्यणे नि सदा ते विसोसि

ला स्थिर राहो ॥ मना संत अने तशो धूनि पाते ॥ ६० ॥ ह्यणे जणा तो तो जे निमरुव आते ॥ अतथ्यासि ते कि असा क्रोधा हो ॥ ज निमिपपोपा हाता पा हा वना ॥ त्या लक्षिता वेगु खेरा हा वना ॥ ६१ ॥ बहुशास्त्र उचितो वा उआते ॥ जने निश्चयो भेक तो हिन साहे ॥ अति मो उतिशास्त्र भेदे विरोधे ॥ गति खंडतिशास्त्र बोधि प्रबोधे ॥ ६२ ॥ जणे मक्षिका मक्षिलि जाणावेची ॥ त्या जणे नालासि प्रासके वि ॥ अहेभाव जे मानसि चा विरेना ॥ त्या शान कल्यांत कोळिमिळेना ॥ ६३ ॥ नकोरे मना वाद हा खेद करी नकोरे मना भेदन न करि ॥ नकोरे मना सीकडे पुढिल सि ॥ अहेभाव जे राहिल तुज पासि ॥ ६४ ॥ अहेता गुणे सर्व हि दुःख हातें ॥ मुखे विल्लि ज्ञान ते व्यर्थ जाते ॥ सुखे राहाता सुखीह सुखे भाते ॥ अहेता तुझे विषो धूनि पाते ॥ ६५ ॥ देह बुद्धिचे निश्चयो दड जाला ॥ देहातिले हेतसां इत गला ॥ देह बुद्धि ते आत्म बुद्धि करावे ॥ ६६ ॥ जना विधरा वि ॥ ६७ ॥ गुणांता आठवावा ॥ मन प्रजननि घरा वि ॥ ६८ ॥ तरिलोपनिश्चित गला ॥ संगतिसंजननि करा हाते ॥ मुखे विल्लि ज्ञान सुखे भाते ॥ अहेता तुसि ॥ ६९ ॥ देहाकार विस्तारया देहाचा ॥ स्त्रिया पुत्र मित्रादि के मोहाची ॥ बळभाति हे जन्मचिं ना हरा वि ॥ सदा संगतिसंजननि विधरा वि ॥ ७० ॥ बरा निश्चयो शास्त्रिताचा करा वा ॥ ह्यणे दास संदेह तो विसरा वा ॥ घडिने घडिसार्थकाची करा वी ॥ सदास सं ॥ ७१ ॥ करिवृत्तिनि वृत्तितो संत जाणा ॥ दुराशा गुणे न के दैन्य वाना ॥ उपाधि देह बुद्धि ते वाद वि ते ॥ परिसंजनना के वि बाधोसके ते ॥ ७२ ॥ नसे अंत आनंत सता पुसा वा ॥ अहेकार विस्तार हा निरसा वा ॥ गुणे विण निरुण ते आ ठवा वा ॥ देह बुद्धिचा आठ उनाठवा वा ॥ ७३ ॥ देह बुद्धि हे आत्म बोधेस जाची ॥ विवेकेत या वस्तु विभेदि घ्या वि ॥ तें दाकार हे वृत्तिना हि स्वभावे ॥ ह्यणे नि सदा ते विसोसि



प्र... ॥ ७१ ॥ देह बुद्धि हे आत्म बुद्धि करा वि ॥ ७२ ॥

तजवे॥७॥असेसारसाचारतेवोरलेसे॥येहिलेचनि
 पाहातादस्यत्रासे॥निरामासनिगुणतेअकळेना॥अहं
 तरागुणोकल्पिताहिकळेना॥७३॥स्फुरेविषइकल्पिताते
 अविद्या॥स्फुरेअंस्ततेजाणामायासुविद्या॥मुक्किकल्पनाहो
 ररुपेचिजालि॥विवेकेतरीसस्वरुपिनिमालि॥७४॥वि
 धिनिर्मितालिहितोसर्वकाळी॥परिलिहितोकोणसा
 -याकपाळी॥हरुजाळितो लोकसंस्कारकाळी॥परिसे
 बटिशंकराकोणजाळी॥७५॥जगीदोदशादिसहेरुद्रअ
 का॥असंख्यातसंख्याकरिकोणशका॥जगादेवधूज
 ळिताआटेळेना॥जनिमुख्यतोकोणकैसाकळेना॥७६॥
 तुटेनाफुटेनाकहादेवराणा॥चळेनाटळेनानहेदैव्य
 वाणा॥वसेनादिसनाकगलावनासि॥कळेनाकळे
 नाजनामिपणासि॥७७॥जयगनलदेवतोपूजिता
 हे॥परिदेवशोधू॥जगीषाहातोदेवको
 य्यानकोति॥जयतेतेत्विमोठी॥७८॥ति
 लिदेवजेमुनिनि॥तयादेवरायासिको
 णिनबोले॥जगीथे॥वोरलेसे॥गुरुविन्
 रेसर्वथाहिनदिसे॥हातोक्षको॥र्यानको
 रि॥बहुसोलमनावा॥मनिकामनाचरवि
 धातमाता॥जनितानचेअर्थरमासहाता॥७९॥नकळे
 टकिचाचकुद्रव्यमीदो॥नकेनिंदकुमछरभक्तिमंदु
 नकेउन्मत्तुवेशनिसगबाधु॥जनिज्ञानियातोचि
 साधुअगाधु॥८०॥नकेवाउगाचावटिकामपोदि॥कि
 यविनवाचाचतातेत्विमोठी॥मुखेबोलिलासारिरवे
 चालतोहे॥मनासदुरुतोचिशोधूनिपाहे॥८१॥जनिम
 क्तिज्ञानिविवेकिविरागी॥छपाबुनपस्विक्षमावंतयो
 गी॥प्रमुदक्षविमन्नचातुर्थजाणो॥तयाचेनियोगसमा
 धानबापो॥८२॥नकेतेचिजाले॥नकेतेचिआले॥क
 ळोलागलेसज्जनाचेनिबोले॥अनुर्वाच्यतेवाच्यवा
 चेवद्वि॥मनासलआनेतशोधितजावे॥८३॥लपावजा



This is a vertical watermark text that reads: "The Copyrighted Material in this book is the property of the author and is not to be reproduced in any form without the prior written permission of the author."

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीरामचंद्राय नमः ॥ श्लोकः ॥ त्वयि मु
 ख्यमखमुरख्य ॥ नान्यस्य कस्य जीवामि ॥ जितेश्वर वैदपि
 त ॥ वसनाशनमात्रजिवनासर्वी ॥ १ ॥ टीका ॥ विमुरखम
 खपतिलुवान्वणेकेविआता ॥ मजतररीइतराचिसख्य
 नाहिअनता ॥ सकलहिलनुवासीसासीदेतोसिअने
 परिमीलवसणेहिसामधेकायधेने ॥ १ ॥ श्लोकापरितः
 पस्यसिपरितः ॥ शुनोक्षीपरितोजगद्धिजानासी ॥ माराम
 किंलदंतणंशुनोक्षीनवीक्षसनबावेसि ॥ टीका ॥ सर्वत्र
 नूपाहसीआयकेसी ॥ सर्वत्रतुजाणसिसावकासी ॥ मिहि
 तदगतेरेकसीनामतिनपाहेहिजानसीना ॥ २ ॥ पृथ्वीप
 तिलागूणोरंकजाणे ॥ रंकामिपृथ्वीपतिकहिनेने ॥ सम
 ग्रहियुक्तेअसेअविशहश्लाघ्यकसेतुजहोयसुजा ॥ ३ ॥
 अपक्षनेयान्वकिशोभता ॥ अदेनेबेहदुरिआहे ॥
 साचुंनकाचिकुशणी ॥ रतितेनुजनिंद्यआहे ॥
 ॥ ४ ॥ अरुचिवामजान ॥ वाळकुप्राथिताहे ॥
 जेजेपोयात ॥ उरुतेम ॥ तसुणीपवताहे ॥ विश्व
 चाबापतुकीबुजजव ॥ लेमानपवि ॥ खेदिकर
 खवदकीवसुनेरघुपति ॥ करावे ॥ असेचियेदी
 रिसबांधलाहे ॥ अरि ॥ घातलाहे ॥ नसाउवीते
 रिगेदिएसि ॥ हेक्तामासाजापनासी ॥ ६ ॥ आहोडेचिअ
 युक्तआहे ॥ श्रीमेतनुमितरिवाहे ॥ दारितुसेतुजनहोयसं
 ती ॥ मासिमणुषाचिअधिनरलि ॥ ७ ॥ त्रिलोक्यसरनदि
 क्षीताहे ॥ पाळावयाशक्तिअखडआहे ॥ यजुनिमातेस्पर
 तेकसीते ॥ लाहानमोव्यासजसासजिते ॥ ८ ॥ अन्यायमा
 सेजरिकोरिजाले ॥ रागसियसितेरिकायचाले ॥ प्रतक्ष
 लाताविलीबाळकाहि ॥ मणुष्यमानारसतेहिकाहि ॥ ९ ॥
 राघवावदयथायसुबोधो ॥ क्रोधहाकवनीयाअपराधं ॥
 घालितोदशरथान्वरणस्त्रि ॥ आनबोलसीसणिलुटके
 त्वि ॥ १० ॥ येथेमलाहपनहीनजनाअनाथा ॥ लक्ष्मीपति
 सकळकष्टयूतासिनाथा ॥ हेबौलावंतीकरपदव्यय
 मस्तकाळा ॥ पाहनिकेविगुगलारघुवंशपाळा ॥ ११ ॥ क
 रुणाकरआदिअसिनवहे ॥ शक्यवरतीबुरिदाव
 लिहे ॥ शीरणंगतआणिबेहहूपना ॥ समुपेक्षसि

जीवाप्रि
रसव



अधि

रघुजापराणा ॥१२॥ किति राघवाजाता करुणा करवि
 मीहीनजाहे शरणस्वत्रा वि ॥ सपाळु होई शरणंगतकी ॥
 गी तोसि जेशा बिरदा सिदा की ॥१३॥ इच्छुनिसेवा तरिकाय
 दाता ॥ दातान केवेतन मात्रदाता ॥ हीनासिसेवा विमुखा
 सिदेई ॥ नटा करपा वरिमे घहोई ॥१४॥ सेवकासजपणे
 जरिसेवा ॥ इच्छिसिलमजपासुनिदेवा ॥ आळसिजरि
 सेवकपुत्रा ॥ पाळिनातिघरनीशपवित्रा ॥१५॥ मसर्वजी
 स्वजउराधिजिनाव्यासी ॥ आराधिले तरिनसेतुजका
 सयासी ॥ अज्ञानआळसमाहानवसंततिसी ॥ पिडेविया
 प्रळयेमग्निशमाववयासि ॥१६॥ क्षणक्षणा वीशमयत्वि
 चपावे ॥ कठिप्यहेकाय मूलअसावे ॥ स्वामिपुस्याप
 रिसेवकसि ॥ कठोरता ॥ कैसी ॥१७॥ शूद्रमांडि
 वरि बसुनि वाळत ॥ नकारघुपते पुरबीको
 उमासे ॥ लुसवक्रां ॥ जि तोबुळ द्योळे ॥
 साविआशाह इंधा ॥ निळे ॥१८॥ माते हाते
 करुनि सुमुखी समुख ॥ आहे पाडे परमरउका
 बोलविलु ॥ शंभरामे ॥ दरसेश दिनी वासे ॥
 यशदेरे परमसुखाने ॥ वका ॥१९॥ प्रविस्वधि
 राज्यावरी कठिन व्याता ॥ जसे अपसाव्या ठारक
 रीलसणी योग्यनदिस ॥ क्षणभुला मध्ये अतिकठिन तो
 हीतरिअसे ॥ माहावर व्याघ्रा मीतरीअनया घनुतजसे ॥२०॥
 जेथं माताबाप हे वगवालि ॥ दोघामध्ये येकवाळा सि
 पाळी ॥ मासे दोहि पक्षहितं विजेका ॥ कैसें किजेतुदया
 हिनतेका ॥२१॥ दीनशब्द जरि आयकसिना ॥ व्यापका
 प्रतिअसह्यणवेना ॥ सर्व जाणूनि उगाविअसते ॥ निं
 द्यवाक्य करुणा विवसयते ॥२२॥ कार्यभाग्यवेसनातस
 मर्थु ॥ गुंतला दिसतसे रघुनाथ ॥ हीनशब्द करुणा मृत
 मासे ॥ श्रवनी कापउतिना हरितुसे ॥२३॥ रंगीराक्षेस
 भंगीताच बहुधा कायातुसिकेष्टलि ॥ तेणोपन्नग मंच
 की दिननिशा विश्रांतिता सारिलि ॥ जेवि बोलतसे
 विचित्र करुणा वाक्य बहुतुजला ॥ तेतूं कणरिदिक



दान धरि सिहे वाट ता हे म ला ॥२५॥ वजापरि हृदय जान
 असे उलु नि ॥ पाशान हिर उती मे द्वे वने करुणि ॥ मासा वि
 काय अपराध विशाळ जाला ॥ जेणे करु नि करुणा धि उ
 दास ठेला ॥२६॥ बोल तो नि पट अल्प मतिने ॥ नी हे या ब
 वूं ज देखु निशाने ॥ लोक फार करि ति उप हासा ॥ श्लाघ्य
 ना हि तु ज ला शी क विनशा ॥२७॥ दुग्धं करु णि र सना जळ
 लि जया चि तो ता क फुं कु णि पि ता ग ति पा म रा वी ॥ दोळिक
 प्रक्ति अवलो कु नि विश्व असे ॥ तां टा किले ल्पण उनी मजला
 गि ते से ॥२८॥ देखो नि नि पट का कुळिते ॥ तु ल्पान करि सी
 ज रि मा ते ॥ स्वामी ता प्र ग ट आ पुलिके जि ॥ राघ वा अ सु
 ल तु म धे जे ॥२९॥ क्षीरी चे प रि र क्ष क आ ल तु प ॥ उ लं उ णी
 रा मा करि का य र पा ॥ न सा हा तु सा भि जे जाला व रि ष्ट ॥ के रि
 काय पा पं पे री अ र ष्ट ॥ ३०॥ चि य ल प क गे वि या ते
 प्रो क्षा णी या णी ॥ हि म मा ते शी च्य हि ना न रा
 ला ॥ स्प र्शु नी या मंत्र ॥ ३१॥ का वि मा णि व
 डि जे च तू रा ति ॥ का दि उ का इ चा पू र प अ व
 धि म म गी त्र ॥ का य पा मंत्र ॥ ३२॥ म को क र य ल
 स्प णो नि प क्षि ब्बो ले प रि म क्षि ते या चि मि ह स ह
 जि अ घा ला ॥ नि दि त र म्ब वा वा शी ३३॥ क स्तू री के
 च्या ध र णी सि का दा ॥ जि ले स्व ग धा ॥ ते रा प
 रि दा स अ से तु स कि ॥ मा आ पु ला दो ष क दा न दा कि ॥३४॥ पु ण्या
 ला ला स्व ल्प जे पा प जाले ॥ या ला प्री य श्रि त हि बे ली य ले ॥ त्र
 ष्टे प्र य श्रि ते पा प्या सि म ति ॥ देखो नि जे वि गौ शा र्धु चि ते ॥३५॥
 हो इ ल सं र ब्या न भ तार का वी ॥ हो इ ल सं र ब्या स क चा अनु
 चि ॥ मा स्या अ घा चा स मु दाय का चि ॥ नो हे ल सं र ब्या र धु
 ना थ सा वी ॥३६॥ जा ण ते प णा तु से श त ली की ॥ स य सां ग त
 व किं कर मि की ॥ तूं य थार्थ म म क ल्प श सं र ब्या ॥ जा न तो सी
 अ थ वा न हि मु र्खा ॥३७॥ अ प रा ध करि अ प रा ध करी ॥ रा धु
 भू रान मी अ प रा ध करी ॥ प्र भु पा ष ट्ठ पा ष ट्ठ पा लु मा ते ॥
 जन नी न हि मा ग त का हि लू ते ॥३८॥ ना थ तूं अ सी नि या चि
 अ ना था ॥ हि अ ने द क व द न य त्र था ॥ मी स ना थ त रि तां उ पे
 क्षी ले ॥ जा ण कि प ति वी शी ला जि ले ॥३९॥ हा ने हा ब उ सु री



न वृत्तैस्वव ह्याप्रती ॥ अज्ञानिपशुधेनु घालुनी उडिक्वा-
 चित्तसंप्रिती ॥ मासेनाप्यअसेकसेणी वडिलंतुसर्वीहजाण
 ता ॥ मास्याठाईएपावृ हो उनिकदा जाणेसिनादीनता ॥ ३१ ॥
 मुख्यस्वाधीनसर्वजाणकरुणाकुपात्रनावेध रि ॥ मास्याठाई
 कठोर केवितुजलामिपुसतो श्रीहरि ॥ आताउत्तरकायदेसी
 लमलाम्यालुजलाकोहिलेदीनानाथपरंतुएजीपणोतामोम्य
 संपादिले ॥ ३२ ॥ अन्यत्रधूं उल्लुणिकेउतीहो ॥ केलेह्मपातेउचि
 तातनाहि ॥ संसारवासिनूजआवउता ॥ त्यातनाहिअपराध
 रिता ॥ ३३ ॥ साचालाहानअपराधमाशा ॥ हेजाणलाकवनमा
 गुवीदेवराजा ॥ मीजाणतामृणसीतुतरिताजनाते ॥ सर्व
 जताकायधरीलीकायनिर्मययाते ॥ ३४ ॥ कपटकरुणी
 वाळिमारिलजखबंधा ॥ विधवनेमोगीलियासी
 साधु ॥ ह्याणसिधरमर ॥ गेवआला ॥ अनुचित
 रघुनाथाप्रयतोमुत्त ॥ लेअचोशाणिजआ
 यजाचि ॥ उमजाले ॥ कोपिष्टोतुजसमि
 पआला ॥ कोकअसेन्य ॥ ला ॥ ३५ ॥ समासुमद्र
 प्रतिबोलताहे ॥ कल्पुन ॥ भाग्यतहे ॥ सुतापलेचि
 तउदारकीती ॥ बालुन ॥ समृती ॥ मागदुज्यचि
 कथिजेतदोष ॥ असंमृह ॥ सअशेष ॥ ऐसेंतुवापूर्व
 चरित्रकेले ॥ म्याकायतसेअपराधयले ॥ ३६ ॥ परिक्षका
 सीसगउकरावा ॥ कीआपुलादामकूजामृणावा ॥ इछेसि
 यतेकरितोसिदेवा ॥ मीमृसमृसासहकायहेवा ॥ ३७ ॥ जेजि
 तुकेराघवबोलनेते ॥ मीबोलिलेतुजपुटेबहते ॥ आधा
 पिहीलुरुसलासीसाचा ॥ उपायपायावरिलोळणित्वा ॥ ३८ ॥
 प्रनाममात्रसलिलेकरुणि ॥ विशेषुधाचानरिकोपवन्नि ॥
 असुनितुसांडिसनाचकोप ॥ श्रीराघवाहेफचलेस्वपाप
 ॥ ३९ ॥ स्वामिनसेतुजसमानपोहि ॥ मासेपरिआणिकहीनना
 हि ॥ शिनाअनाथाप्रतिएकबंधु ॥ आतावृकायएपाबुसिं
 धु ॥ ४० ॥ तूहीसमंतुभुवनत्रयमदिरत्वा ॥ दिपप्रकाशतोष
 मुदेवसाचा ॥ यानुजमाजीकरुणाजरिदेहेहिसिना ॥ मी
 अधकीनुजमधेचएपाअसेना ॥ ४१ ॥ मीसापराधमृणुनि



श्री
 ३३

मजजन्मजन्मी ॥ तोपी उिलेनी राप र्थे हिन के मी ॥ लं उा सि
 दे उ करिता तु जला जयना ॥ चा सोनिया तरि ह्यपा हृदले
 हवेना ॥ २१ ॥ न प्राथिता रात्रिसि मो क्षदे सी ॥ सप्राथिता
 हास उ हास हो सी ॥ तू वै र भावास्स वफार मी सी ॥ वथा ह्यपा
 ह्युपणा वाग विसि ॥ २२ ॥ मी कायन का प्रसन्न नो हि ॥ पर तं
 साचे अनु दान पा हे ॥ स्वराज्य सुग्रीव बि भिषना ने ॥ क्रि दान
 केले वदिजे प्रभु ने ॥ २३ ॥ सुहमाया जवळु णि जरे अल्पो
 हे ॥ ता घन लिकान हि फार सी हे ॥ यथे चंड पर जे दि धले त
 या तो ॥ लिका सया करु नीया कवना पदार्थ ॥ २४ ॥ अं द्यो णि
 पशू यो णि जाला ॥ गजे इंद्र के रित्ति मुक्त के ल ॥ दाता तय सि
 वरु वैरा जाला ॥ पाता ना ॥ तितो गव वी बांधी यला ॥ २५ ॥
 चीत्त वत्ति अति उग्र जया सि ॥ रंम्य लं कि गती क्लित यत्ति ॥
 नामी का दशरथ सि दय वि ॥ पत्न दुः सह केले ॥ २६ ॥
 उगे विजे राह दिराज्य ॥ श्रीव विमोषनाला ॥
 सर्वाश्रमा वा अशो व ॥ तो मान्नी मारतिला ॥
 ॥ २७ ॥ जे जे कर सि ॥ मोटे पन णे तु जशोन
 तो हे ॥ तेनी श्रय सर्व ॥ दो सी असे मी परि क्ष
 आती ॥ २८ ॥ तु गुला धरि ॥ री सी ॥ को वे स्व र ह्य
 स्वव राम जसि ॥ मार ॥ नं य थत्ति ॥ किं सांग हो
 न्याय महा जना ते ॥ २९ ॥ ॥ प मो नतुर घुना था ॥ तुं
 ची वे धु कुळ सी ल अना था ॥ पा व ला सी जरी नी छर ते तो
 वज्र तु ल्य त्र न हि म ज हो ते ॥ ३० ॥ मा ते रपे ने जरी र सि
 सी ला ॥ मानित ना चे परि थोर का बा ॥ ह्यपा चि ना हि जरी
 राम गु पा ॥ मला विरोष त्र न का ल र पा ॥ ३१ ॥ यान तरे बहु
 त काय वृंदे नि आता ॥ स्वामि पुटे उ च्चित ना हि चि धि वा ता
 अजन्म दोष घ उले ज उले स दाता ॥ ते पा करो नि म ज मा
 न सी दुःख होते ॥ ३२ ॥ पूर्व आश घ न ह्य उ ना ॥ आतां
 तरी अल्प घ उ णि ये ना ॥ इ धि त समी ज रि त्म इ ष ॥ मुट
 स मा से हृद र वे द क ह्य ॥ ३३ ॥ दुराचारी दु बु डि का मा सि व
 स्य ॥ असे मी तु सा कान के ॥ उ अ व स्य ॥ र धु श्र ह तु पा चि
 ता हे सी मा ते ॥ ह्यपा हे व सि ध न्य प्रा व ज या ते ॥ ३४ ॥ अ
 पा र मा सी अ परा ध की ती ॥ पू र तु णि स ह्य पे क मू ती ॥ श्री
 राम हे नाम मु र वा सी ये ते ॥ ये तो ह्यपा ह्यु प न ला क्ष ज ते ॥ ३५ ॥



रा

तु स्त्री वरिजाणा ॥ सा पापि याभ्यावदनामधुना ॥ निघे
 लके सोपरीरम्यवाती ॥ नीरामयारामवीभोत्तनेनी ॥ ६७ ॥
 चरफुडितबहुत्रस्था ॥ सर्पवीरवेकरणी ॥ धनधनशब्दे
 मृमेकीसोपुनि ॥ मजमुखिगसुजाकाणिरमंत्रनीचलि ॥
 हरिदृढतरतापोधवा ॥ आजिपावी ॥ ६८ ॥ त्रस्था मे होस्ना
 अतित्रमजाणा ॥ घोषेगेवाभ्यय हीनदिना ॥ लपाकरा
 क्षदमसाववित ॥ करनीयनिमुचिरक्षिमाते ॥ ६९ ॥ त्रस्था
 नदीव्यालहरिविशाला ॥ अयंतकासविसजिवजाला
 पातिलुपेचीउधउनिपाहे ॥ ज्वलज्वलटाकुनिवोदिव्या
 हे ॥ ७० ॥ त्रणानाउसावजवोदियुले ॥ माते कष्टप्रामदेदी
 र्धकाळेदेवानुसवित्तवळेसपेने ॥ उद्धरावेत्यागज
 दाप्रमाने ॥ ७१ ॥ त्रस्थाअसोववळतारिकहे ॥ तिच्याम
 यानेशरणागताने ॥ विशालत्रिशातिहिरावरने ॥ रक्षीम
 लाकोशिकतुयतेणे ॥ ७२ ॥ सुपुत्रवाप्रमुख्यरज
 णीगालेसालमजर ॥ ७३ ॥ पोसावासुतावळता ॥
 ॥ ७३ ॥ पाशावातागो ॥ ७४ ॥ गावेअडिल्याणिजपूर्व
 पापे ॥ माझेरीरीद ॥ ७५ ॥ कल्यानकीजेप्रसुतीच
 तुल्य ॥ ७६ ॥ मोहेमा ॥ ७७ ॥ आहे ॥ दोनिसेउवोन
 बीसीतवाहे ॥ ७८ ॥ पक्षी ॥ ७९ ॥ उतरेणे ॥ श्रीकृष्णवेवाप
 हंउप्रमाणे ॥ ८० ॥ न ॥ ८१ ॥ करिसंमरणमारिसह
 श्रार्जुना ॥ ८२ ॥ असाभार्वगवसागरतयातोगर्वकेलउत्तर
 ॥ ८३ ॥ स्वर्गीचीगतिखुदलाहणउनिमीतुजलाप्रायित
 ॥ माझेदैन्यगणासितिगतिकरिजेन्हेबहुकांपतो ॥ ८४ ॥
 रगजुळमतीनेथेतवतापत्रयहे ॥ जउत्तरमणमासेमृत
 नेरणनोहे ॥ अवरजवणीतेसीयातकीजिप्रवेश ॥ प्रभु
 सउकरिजेसातुवणीसावकाश ॥ ८५ ॥ असंकटितुमज
 लास्मरुली ॥ तुजसंपतीदेइनकांमृणोसी ॥ स्मरणेनि
 कोथेउनेबहुधामहिमातुजये ॥ स्मरणेवीनकायउणप
 णनये ॥ ८६ ॥ नइप्रमोदुःसहदेन्यमोसे ॥ निवारिचिंता
 समुदायवोसे ॥ पाहातेसेवासतुस्यामुखावी ॥ आपिख
 यलिमनमिनुवेची ॥ ८७ ॥ मासामनोदुःखसमुहवरी ॥ अ
 न्यायेनानापरिचेबीदारी ॥ हमापतिदासजणीलपाजा ॥
 नकोउपेक्षारणागताला ॥ ८८ ॥ शरथधरनिसंपविसिक



मकेले सुसलफळसमुपेसुर्यवोशासिआले ॥ दशमुरव
 निवययातपउव्यक्तजाले ॥ रघुपतिरुपचीताकाचवेदी
 चकाळे ॥ ५१ ॥ कामासियनाघनपूत्रकाता ॥ हेसर्वमायाम्
 यवेर्थचित्ता ॥ सर्वत्रआनेदअपोयहना ॥ साराघवेका
 नरमेसिचित्ता ॥ ५२ ॥ निजहयकथणीहेरकित्वाहनाला ॥
 मजमजजवरिजेविश्ववाहेतयाला ॥ सजुनिसकळचि
 तायावरिनिश्चयेसि ॥ अतिसुरवविपतेकायपावेसिनासि ॥ ५३ ॥
 ईछीसिजरिमनाहितमात्रा ॥ सेविराघवरसायनमात्र ॥
 मक्तिनाहितरिअंतरबोली ॥ दुर्जनीवीशइचवळशालि ॥ ५४ ॥
 करावयातेनकरावयाते ॥ जोशक्तनोटाकणिरामचिंता ॥ क
 रुनकोआणिककामचित्ता ॥ ५५ ॥ दारिद्रहावानुवपटलाहे
 वेकूठसनाउळिमघआहे ॥ विद्युतामाडिसिणिससा
 जे ॥ वबेसिपाईसनउनिवोमो ॥ ५६ ॥ दिनेशावंशाशरयुती
 रशा ॥ गीरीशपुत्रादिस ॥ पीतामनोमानसइस
 तोशा ॥ तोहामहीमान ॥ ५७ ॥ मितमुरवांबु
 जसिंधुसुतास्वळ ॥ रदशामळ ॥ तरणी
 वेशसमुद्रवजहे ॥ सुहहरेतहे ॥ ५८ ॥
 स्वामिजयोधापुरिच ॥ ष्यवेशीपतीजाणकि
 वा ॥ ५९ ॥ इद्रादिपदांबु ॥ ने ॥ मासिजसोतेस्थ
 विपरमक्ति ॥ ६० ॥ ना ॥ सेदशरथाजेजेतया
 वेदिति ॥ आनंदेकरि ॥ जतिदेचंदनास्थिती ॥
 जैसातोफळलोदमीसंगननाहोलेथसावंमाहा ॥ आमेदि
 करितोउदारहदईमासासुगंधवहा ॥ ६१ ॥ श्रीरामनामरम
 वीअतीसावळिहे ॥ मास्यामनासिदृढआश्रनीशानओठ
 कोन्हिकपूण्यसुसलतेमजलधमेत्रि ॥ जैसिअहोरघुपति
 प्रतिभुमीपुत्री ॥ ६२ ॥ वामस्थानीवीपुलमीरवेमाळवी
 दुखतेवी ॥ मेघःशामेअतीरुचिरतानाघुलीमन्मथा
 की ॥ पुन्यश्रेष्ठाप्रमुदशरथापुवेजाचेअसह ॥ नेत्रःपाति
 अमरतभरलेदुमनातेचिणाहे ॥ ६३ ॥ वायुवतपसार्थकेत
 हतुमाभावेपुंढेतिष्टतो ॥ पश्चिमेहपनेसवामरउभससु
 त्रकेकेयता ॥ मक्तिज्ञानबीशपलक्ष्मनुवळितोदक्षना
 गिउभा ॥ मध्यराघवजानकीनुमिनमीजिसुतवीजुप्र
 मा ॥ ६४ ॥ निलोसलचिदळतुल्यनेत्र ॥ जिमुतेपंक्तिअम
 म्यगात्री ॥ दशासठेताजयगातिवदि ॥ मियासीविनेड
 रनासीवेदी ॥ ६५ ॥ सुवर्णवलिस्थीनवामभागी ॥ लिला



॥ ५१ ॥ कामासियनाघनपूत्रकाता ॥ हेसर्वमायाम्
 यवेर्थचित्ता ॥ सर्वत्रआनेदअपोयहना ॥ साराघवेका
 नरमेसिचित्ता ॥ ५२ ॥ निजहयकथणीहेरकित्वाहनाला ॥
 मजमजजवरिजेविश्ववाहेतयाला ॥ सजुनिसकळचि
 तायावरिनिश्चयेसि ॥ अतिसुरवविपतेकायपावेसिनासि ॥ ५३ ॥
 ईछीसिजरिमनाहितमात्रा ॥ सेविराघवरसायनमात्र ॥
 मक्तिनाहितरिअंतरबोली ॥ दुर्जनीवीशइचवळशालि ॥ ५४ ॥
 करावयातेनकरावयाते ॥ जोशक्तनोटाकणिरामचिंता ॥ क
 रुनकोआणिककामचित्ता ॥ ५५ ॥ दारिद्रहावानुवपटलाहे
 वेकूठसनाउळिमघआहे ॥ विद्युतामाडिसिणिससा
 जे ॥ वबेसिपाईसनउनिवोमो ॥ ५६ ॥ दिनेशावंशाशरयुती
 रशा ॥ गीरीशपुत्रादिस ॥ पीतामनोमानसइस
 तोशा ॥ तोहामहीमान ॥ ५७ ॥ मितमुरवांबु
 जसिंधुसुतास्वळ ॥ रदशामळ ॥ तरणी
 वेशसमुद्रवजहे ॥ सुहहरेतहे ॥ ५८ ॥
 स्वामिजयोधापुरिच ॥ ष्यवेशीपतीजाणकि
 वा ॥ ५९ ॥ इद्रादिपदांबु ॥ ने ॥ मासिजसोतेस्थ
 विपरमक्ति ॥ ६० ॥ ना ॥ सेदशरथाजेजेतया
 वेदिति ॥ आनंदेकरि ॥ जतिदेचंदनास्थिती ॥
 जैसातोफळलोदमीसंगननाहोलेथसावंमाहा ॥ आमेदि
 करितोउदारहदईमासासुगंधवहा ॥ ६१ ॥ श्रीरामनामरम
 वीअतीसावळिहे ॥ मास्यामनासिदृढआश्रनीशानओठ
 कोन्हिकपूण्यसुसलतेमजलधमेत्रि ॥ जैसिअहोरघुपति
 प्रतिभुमीपुत्री ॥ ६२ ॥ वामस्थानीवीपुलमीरवेमाळवी
 दुखतेवी ॥ मेघःशामेअतीरुचिरतानाघुलीमन्मथा
 की ॥ पुन्यश्रेष्ठाप्रमुदशरथापुवेजाचेअसह ॥ नेत्रःपाति
 अमरतभरलेदुमनातेचिणाहे ॥ ६३ ॥ वायुवतपसार्थकेत
 हतुमाभावेपुंढेतिष्टतो ॥ पश्चिमेहपनेसवामरउभससु
 त्रकेकेयता ॥ मक्तिज्ञानबीशपलक्ष्मनुवळितोदक्षना
 गिउभा ॥ मध्यराघवजानकीनुमिनमीजिसुतवीजुप्र
 मा ॥ ६४ ॥ निलोसलचिदळतुल्यनेत्र ॥ जिमुतेपंक्तिअम
 म्यगात्री ॥ दशासठेताजयगातिवदि ॥ मियासीविनेड
 रनासीवेदी ॥ ६५ ॥ सुवर्णवलिस्थीनवामभागी ॥ लिला

सुवर्णदमरामयोगी॥ जेविष्णुचासप्तमखेळपाहा॥ तो
 चित्तप्राप्तविराजतोहा॥९१॥ श्लोकाः
 कमलबीपुलनेत्रादीर्घकोदउवाहे॥ अमलसरकृतीचे
 रम्यदोहेंउपाहे॥ अतिरुचिरपुण्यविशोतिचिमिदनिहे॥ अ
 उकरिमनमाश्रयापदिस्थिरराहे॥९२॥ ज्यालगिभागविकारु
 कृष्णानेहाती॥ पाईचालतपरिमूर्तिपूजतति॥ आनंदतपे
 हरितीस्वजनापवित्रा॥ ज्ञानमूर्तिबीलसेसमशुद्धचीता॥
 ॥९३॥ हिरखनीसमदंतमनोहरहासोनिसेदरतजवि
 राजे॥ भाश्करखंशबीभुषनहेरचनसुरवेदेखुनिया
 मुदगाजोश्चित्ततयवदेखुनीसादरफारकरीमनी
 यकलीला॥ ज्यापरिकाचनवंतुयामणीतदुपिकां
 चमणीपुरविला॥ साधकवचरखडुहिकधीयले
 कोदउसायकरियुक्तकोत्तिकरस्यगुणल
 क्षणवर्णितहे॥ ॥९४॥ अणुचरेसदाहे॥
 ॥९५॥ मुखप्रभानी॥ अयतआनंदम
 हिविनीश्री॥ ॥९६॥ ध्वजदेखिजेतोनि
 शाचराचास्यसुचयसवारीप्रमुसीधुवा
 दी॥ आनंदकहासी॥ दी॥ ॥९७॥ नीदस्तरंम्य
 नचपलावसातुरिचतारिकासीलिशा
 यनप्रदेसी॥ जेहमकरवतोसोडिसरविभाथाते
 प्रार्थितोअतीबालक्षणांमूर्तिआता॥ ॥९८॥ सेनात
 यीकुराळनिःकपरिजयचे॥ जेखेळखेळतळुबहुबह
 रूपयाचे॥ नानापरिरचीतसेउचीताउपाया॥ तप्रार्थी
 तोअतिशयेधरिवेशमाया॥ ॥९९॥ भाथाजराकुरिळ
 भाववीनाशीताहे॥ भाळिश्रमेउमरलेश्रमकीदुपाहे
 वेदुनिकळुळरीपुवधवासनाहे॥ चीमुर्तिनीसह
 रिखेजुनिवेदिताहे॥ ॥१००॥ जेहोयशौभासकीताकूळि
 चि॥ श्रीकंठमक्तिरेसहोयतोची॥ कोलिककामिक
 जनकोकिळवी॥ हेअमप्रादीस्मरतोलुखेची॥ ॥१०१॥
 रुप्याचेदउहालेचवरधरुणीयादीघहिनधुउम
 जैसिमदाकिणितेवीमळजळभरवाहनेशुभ्रशा
 म॥



सौंदर्यं चैप कांचेपरि सुळ कतसेपी वले वस्त्रधामी ॥
 जो कोन्हिय कशेल्या वरि वीचरतसे सावळती स्मरी
 मी ॥१०१॥ आकर्ण बोदणी वीशाळ चापा ॥ वर्ष निबाना
 करि थोर तापा ॥ कोन्हि कउकार विस्त्र कोपे ॥ वंही न
 योग्यास अलभ्यरुपा ॥ १०५ ॥ जेब्र म्हो उकरं उ म उण व
 नी लिलास स्थिती ॥ चंडि चापती ने प्रचे उ दि घले को
 दं उतेम गिती ॥ वय देहि वर दे हिची प्रियतमा कागळा
 रम्यते ॥ याग विजन नीरीपु नी वटणी मक्ताशीरी शोम
 ते ॥ १०७ ॥ चापेरीपु नी वटने हुनी जन्म जाला ॥ रम्य प्रभे क
 रुणि मेघ हिजी किय ल्ला ॥ १०९ ॥ अरुक्त पाद तरुणा अरुणा
 परीते ॥ कोन्हि करं म्य कर न पनी हरि ते ॥ ११० ॥ समु
 द्रा वखाधार नी साहन सातिया ॥ येम उ न राम दासा ॥
 सानेचि आयो गपा ॥ १११ ॥ माहा मुद्र लभट
 जाला ॥ ११२ ॥ माहा जयाची ॥ आर्य प्र
 ती श्लोक अखे उ वाच ॥ विर घु वंदनाची ॥ अं
 ती लया मुक्त मळा फुक ॥ प्र त क्षो का स हि रे
 निनेते ॥ वाक्या म्हा ॥ ते ॥ कर्त्ता अ कर्त्ता र घु
 नाथ जेथो ॥ दुशा वया का न स न य ते ॥ ११५ ॥ ३ ती श्री आ
 र्यास्तु ती श्री मुद्र लभट विर वी त स पू णो म रत्न श्री रत्न ॥
 ॥ ७ ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥



॥ ७ ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com